IGNOU IQ HINDI

SOLVED ASSIGNMENT

2025-26

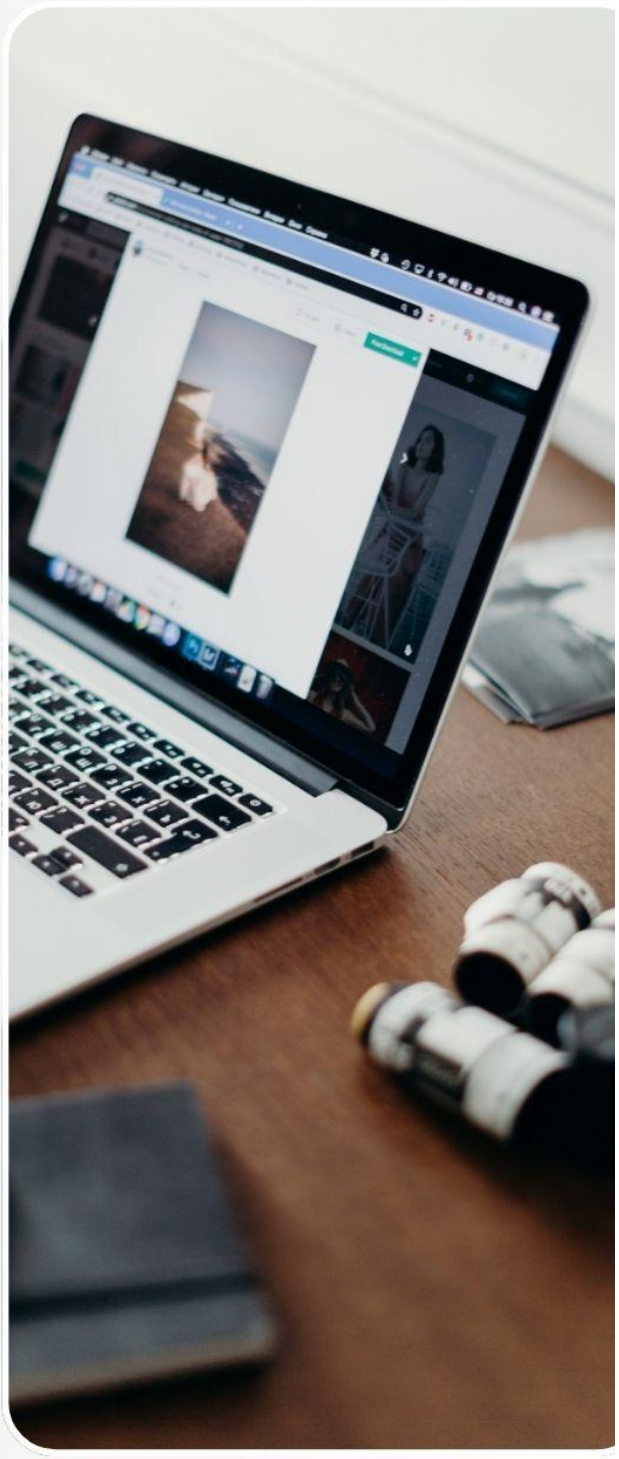

Your journey to success begins here join our comprehensive online course.

CONTACT US

6205717642/8521027286

ignouiqinfo@gmail.com

This PDF of 'IGNOU IQ Hindi' is not for selling or sharing, otherwise legal action can be taken against you.

ASSIGNMENT

BHIC 102

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

PDF By Suraj Kumar Sir (8521027286/6205717642) .....visit our website www.ignouiqhindi.com

हमारे यहाँ Handwritten Assignments/Synopsis/Project बनाया जाता है - 62057107642/8521027286

बी.एच.आई.सी.-102: प्राचीन विश्व की सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक पैटर्न

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: BHIC-102

सत्रीय कार्य कोड: बी.एच.आई.सी.-102/ए.एस.एस.टी./TMA/2025-26

अधिकतम अंकः 100

बी.एच.आई.सी.-102 : प्राचीन विश्व की सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक पैटर्न

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BHIC-102**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.सी. -102 /ए.एस.एस.टी./TMA/2025-26**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) शहरीकरण क्या है? शहरी संस्कृतियों की महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन कीजिए। 20

2) ग्रीक सभ्यता में दासता के महत्व पर चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) प्रागैतिहासिक काल क्या है? चर्चा कीजिए। 10

4) मध्यपाषाण संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषताओं पर चर्चा कीजिए। 10

5) मिस्र के शासन और समाज पर धर्म के प्रभाव की जांच कीजिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) शांग काल में दफ़न प्रथाएँ 6

7) लोहे का प्रसार और इसके निहितार्थ 6

8) गिलगमेश 6

9) सासैनियन अर्थव्यवस्था 6

10) यूनानी साहित्य 6

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) शहरीकरण क्या है? शहरी संस्कृतियों की महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : **शहरीकरण क्या है?**

- **परिचय:**
  - **शहरीकरण** व्यक्तियों द्वारा **ग्रामीण क्षेत्रों** (देहात) से शहरी क्षेत्रों (कस्बों और शहरों) में प्रवास करने का प्रक्रम है। यह प्रवृत्ति सदियों से जारी है किंतु हाल के दशकों में इसमें तेज़ी आई है।
  - **संयुक्त राष्ट्र** द्वारा **शहरीकरण** की पहचान **चार जनसांख्यिकीय मेगा-प्रवृत्तियों** में से एक के रूप में की जाती है जिसमें अन्य तीन प्रवृत्तियाँ **जनसंख्या वृद्धि**, **काल प्रभावन (Ageing)** और **अंतर्राष्ट्रीय प्रवास** हैं।
- **प्रकार:**
  - **नियोजित बसाव:** भारत के शहरी परिदृश्य में नियोजित बस्तियाँ **सरकारी अभिकरणों अथवा आवासन सोसायटियों द्वारा** आधिकारिक रूप से अनुमोदित योजनाओं के अनुसार **विकसित** की जाती हैं।
    - इन योजनाओं में भौतिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों सहित विभिन्न कारकों पर विचार किया जाता है ताकि उनका व्यवस्थित विकास सुनिश्चित किया जा सके।
    - इसका उद्देश्य पर्याप्त बुनियादी ढाँचे और सेवाओं के साथ व्यक्तियों के **स्थायी तथा वास योग्य वातावरण** विकसित करना है।
  - **अनियोजित बसाव:** अनियोजित बस्तियाँ बिना किसी विधिक अनुमोदन के, सरकारी भूमि अथवा निजी संपत्ति पर अव्यवस्थित तरीके से विकसित होती हैं।
    - इन क्षेत्रों में **स्थायी, अर्द्ध-स्थायी और अस्थायी बस्तियाँ** शामिल हैं, जो अमूमन शहर के नालों, रेलवे पटरियों, बाढ़ के प्रति सुभेद्य निम्न इलाकों अथवा शहरों के समीप स्थित कृषि भूमि तथा हरित पट्टी पर पाई जाती हैं।
- **शहरीकरण के रुझान:**
  - **एशियाई विकास बैंक** की वर्ष 2019 की रिपोर्ट के अनुसार, विश्व में शहरी क्षेत्रों की जनसंख्या वर्ष 1950 में 751 मिलियन (विश्व की कुल जनसंख्या का 30%) थी वर्ष 2018 में बढ़कर 4.2 बिलियन (विश्व की कुल जनसंख्या का 55%) हो गई।
    - ये अनुमान दर्शाते हैं कि **यह आँकड़ा वर्ष 2030 तक 5.2 बिलियन** (विश्व की कुल जनसंख्या का 60%) और **वर्ष 2050 तक 6.7 बिलियन** (विश्व की कुल जनसंख्या का 68%) **हो जाएगा।**
  - भारत की शहरी जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हुई है। **2011 की जनगणना** के अनुसार, वर्ष 2001 में शहरीकरण 27.7% था जो वर्ष 2011 में बढ़कर 31.1% हो गया, जिनकी संख्या कुल 377.1 मिलियन है और इसकी वार्षिक वृद्धि दर 2.76% है।

- शहरीकरण की यह प्रवृत्ति **बड़े टियर 1 शहरों** (1,00,000 और उससे अधिक जनसख्या) से हटकर **मध्यम आकार के शहरों** की ओर स्थानांतरित हो गई है, जिसका कारण रोज़गार, शिक्षा और सुरक्षा जैसे विभिन्न **पुश तथा पुल फैक्टर** हैं।
- **आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय** के अनुसार, शहरी क्षेत्रों में वास कर रहे व्यक्तियों की कुल संख्या के संदर्भ में, **महाराष्ट्र** में इसकी संख्या **सर्वाधिक** है जो कि **50.8 मिलियन व्यक्ति** है। यह देश की कुल जनसंख्या का 13.5% है।

  उत्तर प्रदेश में यह संख्या लगभग 44.4 मिलियन है, जिसके बाद तमिलनाडु का स्थान है जहाँ यह संख्या 34.9 मिलियन है।

शहरीकरण के कारण:

- **व्यापार और उद्योग:** व्यापार और उद्योग से श्रम आकर्षित होने एवं बुनियादी ढाँचे के विकास को प्रोत्साहन मिलने के साथ बाज़ारों तथा नवाचार केंद्रों के विस्तार के कारण शहरीकरण को बढ़ावा मिलता है।
- **आर्थिक अवसर:** ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में **शहरों में रोज़गार के अवसर** अधिक होते हैं क्योंकि यहाँ व्यवसायों, कारखानों एवं अन्य संस्थानों की सघनता अधिक होती है।
- **शिक्षा:** ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में **शहरों में स्कूल और विश्वविद्यालय बेहतर** होते हैं। इससे शिक्षा और नौकरी की संभावनाओं को बेहतर बनाने के लिये लोग आकर्षित होते हैं।
- **बेहतर जीवनशैली:** शहरों में अस्पताल एवं पुस्तकालय जैसी बेहतर सेवाओं के साथ ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवसर होने से जीवनशैली बेहतर होती है।

2) ग्रीक सभ्यता में दासता के महत्व पर चर्चा कीजिए।

उत्तर : ग्रीक सभ्यता (विशेषकर एथेंस) की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना में दासता एक मूलभूत आधार स्तंभ थी, जो नागरिकों को राजनीति, दर्शन और युद्ध के लिए अवकाश प्रदान करती थी। दास, जिन्हें 'चैटल' (संपत्ति) माना जाता था, कृषि, खनन और घरेलू कार्यों में भारी श्रम करते थे, जिससे ग्रीक समाज का उच्च वर्ग अपनी संस्कृति को विकसित कर सका। यह प्रणाली लगभग 20% - 50% आबादी का प्रतिनिधित्व करती थी, जो व्यापार पर निर्भर थी।

ग्रीक सभ्यता में दासता के महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा समझा जा सकता है:

- **आर्थिक आधार:** दास ग्रीक अर्थव्यवस्था की रीढ़ थे। खदानों (जैसे लॉरियम), कृषि, और शिल्प उत्पादन में उनका प्रमुख योगदान था। दास श्रम के कारण ही स्वतंत्र नागरिक कृषि कार्यों से मुक्त रहकर सार्वजनिक कार्यों में भाग ले पाते थे।
- **सामाजिक और घरेलू भूमिका:** दास घरों में नौकर, दाई, या शिक्षक (पेटागॉग्स) के रूप में कार्य करते थे। कुलीनतंत्रीय स्पार्टा में, 'हेलॉट्स' (Helots) नामक दास कृषि कार्य करते थे, जिससे स्पार्टन नागरिक केवल युद्ध प्रशिक्षण ले सकें।
- **व्यापारिक संपत्ति (Chattel Slavery):** दासों को सामान्य संपत्ति के रूप में खरीदा, बेचा और पट्टे पर दिया जा सकता था। वे व्यक्ति की स्वतंत्रता से वंचित थे और पूर्णतः अपने मालिक पर निर्भर थे।

- **लोकतंत्र को समर्थन:** एथेंस के लोकतांत्रिक सिस्टम में, दासों द्वारा किया गया श्रम ही वह आधार था, जिसके कारण नागरिक (Citizens) राजनीति, न्यायपालिका और सांस्कृतिक विकास के लिए खाली समय (leisure) पा सकते थे।
- **दार्शनिक और कानूनी औचित्य:** अरस्तू जैसे दार्शनिकों ने दासता का समर्थन किया, इसे प्राकृतिक और सामाजिक व्यवस्था के लिए आवश्यक माना, जहाँ बुद्धिमान लोग (यूनानी) कम बुद्धिमान लोगों (गैर-यूनानी/बर्बर) को नियंत्रित करते हैं।
- **सामाजिक पदानुक्रम:** दास समाज के सबसे निचले स्तर पर थे, हालाँकि कुछ कुशल दास (जैसे खनिक या शिल्पी) को अतिरिक्त वेतन या स्वतंत्रता की उम्मीद मिल सकती थी।

कुछ प्रमाणों से पता चलता है कि दास प्रथा मिनोअन सभ्यता से ही प्रचलित थी, जो आधुनिक क्रेते द्वीप के स्थान पर स्थित थी। मिनोअन ग्रीस के सबसे प्राचीन ज्ञात लोग हैं, और उनकी महानता के प्रमाण आज भी द्वीप पर मौजूद हैं, जैसे कि आधुनिक हेराक्लियन में स्थित नोसोस के पुरातात्विक स्थलों पर भव्य महल और अन्य मिनोअन पुरातात्विक स्थल, जैसे कि मालिया, जो द्वीप पर ही स्थित हैं। मिनोअन अपने शांतिप्रिय स्वभाव के लिए जाने जाते थे और यह भी देखा गया है कि वे मिस्र जैसी अन्य सभ्यताओं के साथ व्यापार करते थे। कुछ प्रमाण यह भी हैं कि मिनोअन लोग अपने काम में सहायता के लिए दासों का उपयोग करते थे। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि उन्होंने कितने दासों का उपयोग किया या दास प्रथा का अर्थव्यवस्था पर कितना प्रभाव पड़ा।

संक्षेप में, ग्रीक दास प्रथा केवल श्रम का साधन नहीं थी, बल्कि यह उनके नागरिक जीवन, लोकतंत्र और आर्थिक स्थिरता की अनिवार्य शर्त थी।

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) प्रागैतिहासिक काल क्या है? चर्चा कीजिए।

उत्तर : प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric Period) मानव इतिहास का वह प्रारंभिक चरण है, जिसका कोई लिखित विवरण उपलब्ध नहीं है। यह काल मानव उत्पत्ति से लेकर लेखन कला के विकास (लगभग 3.3 मिलियन वर्ष पूर्व से 3000 ईसा पूर्व तक) के बीच का समय है। इसकी जानकारी का एकमात्र स्रोत पुरातात्विक वस्तुएं, जैसे पत्थर के औजार, हड्डियों और गुफा चित्रकारी हैं।

प्रागैतिहासिक काल की प्रमुख विशेषताएं:

- **लिखित साक्ष्यों का अभाव:** इस युग के बारे में जानने के लिए कोई दस्तावेज नहीं हैं, इसलिए इसे 'इतिहास से पूर्व' का युग कहा जाता है।
- **पाषाण काल (Stone Age):** अधिकांश समय मनुष्य पत्थरों के औजारों पर निर्भर था। इसे पुरापाषाण (Paleolithic), मध्यपाषाण (Mesolithic), और नवपाषाण (Neolithic) में बांटा जाता है।

- **जीवनशैली:** शुरुआती मानव शिकारी और खाद्य संग्राहक (hunter-gatherer) थे, जो गुफाओं में रहते थे।
- **तकनीकी विकास:** आग की खोज, पत्थरों के औजार, और धीरे-धीरे कृषि व पशुपालन का विकास इस काल की मुख्य उपलब्धि थी।
- **कला का विकास:** भीमबेटका जैसे स्थानों पर गुफा चित्रों (cave paintings) के रूप में मानव रचनात्मकता के सबूत मिलते हैं।

काल विभाजन (मुख्यतः यूरेशिया/भारत के संदर्भ में):

1. **पुरापाषाण काल (Paleolithic):** सबसे लंबा काल, आखेट और आदिम औजार।
2. **मध्यपाषाण काल (Mesolithic):** छोटे पत्थरों के औजार (Microliths) और शिकार के तरीके में सुधार।
3. **नवपाषाण काल (Neolithic):** कृषि की शुरुआत, स्थायी बस्तियां और पहिए का आविष्कार।
4. **धातु काल (Metal Age):** पाषाण के बाद कांस्य और लौह युग का आगमन (जो अधिकांश मामलों में लेखन के विकास के साथ खत्म हुआ)।

प्रागैतिहासिक काल का अध्ययन पुरातात्विक साक्ष्यों (archaeological evidence) पर आधारित है, जो मानव के खानाबदोश से एक सभ्य और स्थिर जीवन की ओर संक्रमण को दर्शाता है।

4) मध्यपाषाण संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

उत्तर : मध्यपाषाण काल (लगभग 10,000-4,000 ईसा पूर्व) पुरापाषाण और नवपाषाण युग के बीच का एक **संक्रमणकालीन चरण** है, जिसकी मुख्य विशेषता **सूक्ष्मपाषाण (माइक्रोलिथ)** औजार, शिकार-संग्रहण के साथ **प्रारंभिक पशुपालन**, अर्ध-स्थायी बस्तियाँ, और बेहतर जीवन स्तर (शैलचित्रों द्वारा प्रदर्शित) था। इस युग में जलवायु गर्म होने से जीवनशैली में महत्वपूर्ण बदलाव आए।

मध्यपाषाण संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ:

- **सूक्ष्मपाषाण औज़ार (Microliths):** इस युग के औजार पत्थरों के बहुत छोटे टुकड़े होते थे (1 से 5 सेमी), जिन्हें 'माइक्रोलिथ' कहा जाता है। ये ज्यामितीय आकारों (त्रिभुज, समलम्ब, अर्धचंद्राकार) में होते थे, जिन्हें लकड़ी या हड्डी में फंसाकर भाले, तीर, और चाकू बनाए जाते थे।
- **शिकार, मछली पकड़ना और खाद्य संग्रह:** आजीविका का मुख्य साधन शिकार और कंद-मूल इकट्ठा करना था। इस दौरान तीर-धनुष का उपयोग बढ़ गया। नदियों/झीलों के किनारे बसने के कारण मछली पकड़ना भी प्रमुख पेशा बन गया।
- **प्रारंभिक पशुपालन और कृषि:** इस युग के अंतिम चरण में मानव ने जानवरों को पालतू बनाना शुरू कर दिया, जिसके सबसे पुराने साक्ष्य राजस्थान में बागोर और मध्य प्रदेश में आदमगढ़ से मिले हैं। कुछ क्षेत्रों में बागवानी के भी प्रारंभिक संकेत मिले हैं।
- **अर्ध-स्थायी बस्तियां:** लोग अब गुफाओं से निकलकर झोपड़ियों में रहने लगे थे। ये बस्तियाँ पूरी तरह स्थायी नहीं, बल्कि अर्ध-स्थायी या मौसमी होती थीं, जो भोजन की तलाश में बदलते स्थानों के अनुरूप होती थीं।

- **कला और संस्कृति (शैलचित्र):** इस काल के लोग कला के प्रति जागरूक थे। भीमबेटका (मध्य प्रदेश) जैसे स्थलों से गुफाओं/शैलाश्रयों में शिकार, नृत्य, और सामूहिक जीवन के सुंदर चित्र मिले हैं।
- **मृत्यु संस्कार (शवाधान):** मृतकों को दफनाने की प्रथा प्रचलित थी, जो धार्मिक विश्वासों की ओर इशारा करती है। सराय नाहर राय में शवों के साथ कब्र में सामान (खाद्य सामग्री, पत्थर के उपकरण) भी मिला है।
- **भौगोलिक विस्तार:** भारत में, ये स्थल मुख्य रूप से कृष्णा नदी के दक्षिण, उत्तर प्रदेश (सराय नाहर राय, महदहा), राजस्थान (बागोर), और मध्य प्रदेश (भीमबेटका) में पाए गए हैं।

संक्षेप में, मध्यपाषाण काल ने पाषाण कालीन मानव को पुरापाषाण के खानाबदोश जीवन से नवपाषाण के व्यवस्थित कृषि जीवन की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5) मिस्र के शासन और समाज पर धर्म के प्रभाव की जांच कीजिए।

उत्तर : प्राचीन मिस्र में धर्म शासन और समाज का अभिन्न अंग था। फिरौन (शासक) स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि (होरस/रा का पुत्र) मानते थे, जिससे उनका शासन निरंकुश और दैवीय बन गया। समाज बहुदेववादी था, जिसमें परलोक (Afterlife) और मृत्यु पश्चात जीवन की धारणा ने ममीकरण, विशाल पिरामिडों का निर्माण और धर्मपरायण जीवनशैली को प्रेरित किया।

मिस्र के शासन और समाज पर धर्म का प्रभाव इस प्रकार है:

1. शासन पर प्रभाव (फिरौन और देवत्व)

- **दैवीय राजतंत्र:** फिरौन केवल राजा नहीं, बल्कि एक जीवित देवता थे, जो मिस्र के लोगों और देवताओं के बीच मध्यस्थ का कार्य करते थे।
- **ब्रह्मांडीय व्यवस्था (माट):** शासक का मुख्य कर्तव्य 'माट' (सत्य, संतुलन और व्यवस्था) को बनाए रखना था।
- **पुरोहित वर्ग का प्रभाव:** राज्य के प्रमुख पदों पर अक्सर पुरोहित होते थे, जो मंदिरों और आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण रखते थे।

2. समाज पर प्रभाव (जीवन और मृत्यु)

- **बहुदेववाद और प्रकृति:** मिस्रवासी सूर्य देवता 'रा', ओसिरिस (मृत्यु/पुनर्जन्म) और आइसिस जैसे विभिन्न देवताओं की पूजा करते थे।
- **परलोक में विश्वास:** मिस्रवासी मृत्यु के बाद भी जीवन में विश्वास करते थे, इसलिए वे ममीकरण जैसी जटिल प्रथाएं अपनाते थे ताकि शरीर संरक्षित रहे।
- **पिरामिडों का निर्माण:** फिरौन की आत्मा के पुनर्जन्म और सुरक्षा के लिए शानदार मकबरे (पिरामिड) और मंदिर बनवाए जाते थे, जो उनके धार्मिक समर्पण को दर्शाते थे।
- **जीवनशैली:** दैनिक जीवन पर देवताओं की कहानियों, जादू और नैतिकता (जैसे उचित आचरण और सत्य) का गहरा प्रभाव था।

3. धार्मिक परिवर्तन

- सदियों से चली आ रही इस बहुदेववादी व्यवस्था में फिरौन अखेनाटेन ने सूर्य देवता 'एटन' की एकेश्वरवादी पूजा शुरू करने का प्रयास किया था, लेकिन बाद में पुनः पुरानी परंपराएं ही प्रचलित हो गईं।

मिस्र का धर्म, जो 3,500 वर्षों तक वहां की संस्कृति को आकार देता रहा, अंततः रोमन शासन और ईसाइयत के प्रसार के साथ फीका पड़ गया, लेकिन इसके चिन्ह लोककथाओं में बने रहे।

सत्रीय कार्य III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) शांग काल में दफन प्रथाएँ

उत्तर : शांग राजवंश (लगभग 1600-1046 ईसा पूर्व) के दौरान दफन प्रथाएं परलोक (afterlife) में गहरे विश्वास, पूर्वज पूजा और सामाजिक पदानुक्रम को दर्शाती थीं। कुलीनों के लिए विशाल, चार-रैंप वाले गड्ढेदार मकबरे, जिसमें जेड और कांस्य के बर्तन रखे जाते थे, आम थे। सबसे प्रमुख विशेषता मानव बलि थी, जहाँ सेवकों, सैनिकों और जानवरों को राजाओं के साथ दफनाया जाता था।

शांग काल की मुख्य दफन प्रथाएँ

- **शाही और कुलीन मकबरे:** शाही कब्रिस्तान (जैसे शीबेइगांग) में 12 मीटर (40 फीट) गहरे विशाल मकबरे मिले हैं। लेडी फू हाओ के मकबरे में 468 कांस्य वस्तुएं, 775 जेड के टुकड़े और 6,880 से अधिक कौड़ी के गोले मिले हैं।
- **मानव और पशु बलि:** शासकों की मृत्यु के बाद उनके अनुचरों (servants), अंगरक्षकों को उनके साथ दफनाया जाता था, जो दर्शाता था कि वे परलोक में भी सेवा करेंगे। बलि के शवों को अक्सर सिर कटे हुए (beheaded) या बिना सिर के पाया गया है।
- **सामूहिक दफन:** कई शवों को एक साथ गड्ढों में दफनाया जाता था, जिसमें अक्सर घायल या दयनीय अवस्था में पीड़ितों के कंकाल मिलते हैं।
- **कब्र का ढांचा:** कब्रों में अक्सर लकड़ी के ताबूत और कीमती सामान होते थे। शीबेइगांग में कुलीन वर्ग के लिए '腰坑' (yaoken/कमर के गड्ढे) आम थे।

7) लोहे का प्रसार और इसके निहितार्थ

उत्तर : लोहे का प्रसार (लगभग 1200-600 ईसा पूर्व) मानव इतिहास में एक युगांतरकारी घटना थी, जिसने कृषि, युद्ध और शहरीकरण में क्रांतिकारी बदलाव लाए। इसने घने जंगलों को साफ करने, गहरी जुताई वाले कृषि औजारों और मजबूत हथियारों का मार्ग प्रशस्त किया। भारत में, इसके साक्ष्य 2172 ईसा पूर्व तक पुराने पाए गए हैं, जिससे आर्थिक और सामाजिक संरचना में बड़े बदलाव आए।

लोहे के प्रसार के मुख्य निहितार्थ (Implications):

- **कृषि में क्रांति:** लोहे के फाल और कुल्हाड़ियों से खेती आसान और उत्पादक हो गई, जिससे कृषि अधिशेष (Surplus) बढ़ा और जनसंख्या वृद्धि में मदद मिली।
- **शहरीकरण और महाजनपद:** कृषि में वृद्धि और औजारों के उत्पादन से व्यापार बढ़ा, जिससे 16 महाजनपदों जैसे शहरी केंद्रों का विकास हुआ।
- **सैन्य शक्ति में वृद्धि:** लोहे के तलवार, कवच और भालों ने युद्ध प्रणालियों को अधिक प्रभावी बनाया, जिससे राज्यों के विस्तार में मदद मिली।
- **सामाजिक-आर्थिक बदलाव:** नए कारीगर वर्ग (लोहार) का उदय हुआ, जिससे सामाजिक संरचना में परिवर्तन (श्रम विभाजन) आया।

8) गिलगमेश

उत्तर : **गिलगमेश** (अक्कादी: 𒀭𒄑𒂆𒈦, सुमेरी: 𒀭𒄑𒉋𒂵𒎌) [1] [a] प्राचीन मेसोपोटामिया पौराणिक कथाओं में एक नायक और ***गिलगमेश महाकाव्य*** का नायक था, जो दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के अंत में अक्कादियन में लिखी गई एक महाकाव्य कविता थी। वह संभवतः सुमेरियन शहर-राज्य उरुक का एक ऐतिहासिक राजा था, जिसे मरणोपरांत देवता घोषित कर दिया गया था। उनका शासन संभवतः प्रारंभिक राजवंश काल के आरंभ में, लगभग 2900-2350 ईसा पूर्व में हुआ होगा, हालांकि वे उर के तीसरे राजवंश (लगभग 2112 – 2004 ईसा पूर्व) के दौरान सुमेरियन किंवदंती में एक प्रमुख व्यक्ति बन गये।

9) सासैनियन अर्थव्यवस्था

उत्तर : सासैनियन अर्थव्यवस्था (224-651 ईस्वी) मुख्य रूप से कृषि, नियोजित कराधान और रेशम मार्ग के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर आधारित थी। इसने चांदी के सिक्कों (दिरहम) के साथ एक केंद्रीकृत मौद्रिक प्रणाली लागू की। यह साम्राज्य चीन और भारत के साथ व्यापार के कारण एक आर्थिक शक्ति बन गया, लेकिन बाइज़ेंटाइन साम्राज्य के साथ महंगे युद्धों के कारण आर्थिक रूप से कमजोर हो गया।

सासैनियन अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ:

- **कृषि और भूमि:** अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर थी, जिसमें सिंचाई प्रणाली का विकास किया गया था। आबादी को कृषि और वाणिज्यिक क्षेत्रों में स्थानांतरित करना एक महत्वपूर्ण आर्थिक उपकरण था।
- **व्यापार (Silk Road):** सासानियन सिल्क रोड के माध्यम से व्यापार को नियंत्रित करते थे, चीन से रेशम और भारत से मसाले का आयात करते थे और यूरोप में पुन: निर्यात करते थे।
- **मौद्रिक प्रणाली:** सासानियों ने मानकीकृत चांदी के सिक्के (दिरहम) का उपयोग किया, जो स्थानीय स्तर पर भी प्रचलित थे। सोने का उपयोग मुख्य रूप से औपचारिक कार्यों के लिए किया जाता था।

10) यूनानी साहित्य

उत्तर : यूनानी (ग्रीक) साहित्य का इतिहास लगभग 3,000 वर्षों से निरंतर जारी है, जो 800 ईसा पूर्व से शुरू होकर आज तक सक्रिय है। यह पश्चिमी साहित्य की नींव है, जिसमें होमर के महाकाव्य (इलियड, ओडिसी), दर्शन (सुकरात, प्लेटो, अरस्तू), नाटक (त्रासदी/हास्य) और इतिहासलेखन (हेरोडोटस) शामिल हैं। यह न केवल ग्रीस, बल्कि एशिया माइनर और सिसिली तक फैला हुआ है।

यूनानी साहित्य की मुख्य विशेषताएं और तथ्य इस प्रकार हैं:

- **उत्पत्ति और विकास:** प्राचीन यूनानी साहित्य की शुरुआत मौखिक कहानियों से हुई, जिसे बाद में फोनीशियन-व्युत्पन्न वर्णमाला में लिपिबद्ध किया गया।
- **प्रमुख विधाएं और रचनाकार:**
  - **महाकाव्य:** होमर द्वारा रचित इलियड और ओडिसी (8वीं शताब्दी ईसा पूर्व) सबसे शुरुआती और सबसे प्रभावशाली रचनाएं हैं।
  - **दर्शन (Philosophy):** प्लेटो, अरस्तू और सुकरात ने पश्चिमी दार्शनिक विचार की नींव रखी।
  - **नाटक (Drama):** यूनानी नाटककारों ने त्रासदी (Tragedy) और हास्य (Comedy) शैलियों का विकास किया।
  - **इतिहास:** हेरोडोटस को 'इतिहास का जनक' माना जाता है।

IGNOU IQ HINDI
AAPKA APNA INSTITUTE

IGNOU IQ Hindi

ZOOM CLASS

All courses are available

PACKAGE DETAILS

- Free Study Materials
- Practice sets (HardCopy)
- Revision before Exams
- Monday to Friday Classes

JOIN NOW

CONTACT US
6205717642/8521027286

www.ignouiqhindi.Com

GUESS PAPER

5 Years Previous Questions Answers

GUESS PAPER

BPSC - 103

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

हमारे यहाँ IGNOU के सभी COURSES के Study Materials जैसे ; Guess Paper/Book Notes/ Practice Sets बहुत ही सरल भाषा में उपलब्ध है.

Our Website
Www.ignouiqhindi.Com

Phone Number
6205717642/8521027286